विवाह मेलापक में नाड़ी दोष विचार

डॉ. सुरेश शर्मा

(ज्योतिष विभाग)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, देवप्रयाग परिसर

भारतीय मनीषियों ने मानव जीवन को 4 भागों में विभाजित किया है- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यास | इन चारों आश्रमों में गृहस्थ आश्रम का विशिष्ट महत्व है | मन स्मृति के अनुसार जिस प्रकार वायु के आश्रय से सम्पूर्ण प्राणी जीवित रहते है, उसी प्रकार गृहस्थ से आश्रय से सम्पूर्ण आश्रम चलते है | गृहस्थाश्रमी सर्वश्रेष्ठ होता है, क्योंकि षि, पितर, देव, जीव तथा अतिथि गृहस्थी से आशा करते हैं कि वे उनके निमित पंचयज्ञ करें |[1] गृहस्थ आश्रम का आधर स्वरूप विवाह संस्कार सोलह संस्कारों में सर्वप्रमुख संस्कार है | यही संस्कार वस्तुत: धर्मार्थकाममोक्ष स्वरूप चतुर्वर्गप फलप्राप्ति का आधर है | इसी संस्कार के उपरान्त मनुष्य देवऋण, पितृऋण तथा ऋषिऋण से मुक्ति प्राप्त करता है | विवाह के इस सर्वव्यापी महत्व को ध्यान में रखते हुए स्वस्थ, सुखद एवं खुशहाल जीवन, पारिवारिक प्रसन्नता, वंशवृद्धि, आर्थिक समृद्धि तथा यश प्राप्ति हेतु प्राचीन भारतीय मनीषियों ने विवाह मेलापक की सुन्दर कल्पना की है |

विवाह मेलापक के दो भेद है, (1) ग्रह मेलापक एवं मंगल दोष विचार (2) नक्षत्र मेलापक | ग्रह मेलापक में वर-वध की जन्म कुण्डली में ग्रहों की स्थिति के प्रभाववश परस्पर पुरकत्व भाव के विश्लेषणके साथ-साथ उनके स्वास्थ्य, भोगोपभोग, सन्ततिसुख, दाम्पत्यसुख, विघ्नबाधा, अनिष्ट का विचार एवं परिहार, आर्थिक उन्नति एवं मंगल दोष का विचार किया जाता है |

नक्षत्र मलापक के अंतर्गत वर-कन्या के नक्षत्रों के मेल के आधार पर उनकी प्रकृति एवं अभिरुचि की अनुकूलता, कार्यक्षमता, भाग्य, शारीरिक तथा मानसिक सामंजस्य प्रेम, स्वास्थ्य इत्यादि वैवाहिक

जीवनोपयोगि विषयों पर सूक्ष्मतापूर्वक विचार किया जाता है | नक्षत्रा मेलापक में आठ प्रकार के कुटों के गुण-दोषों का मुख्य रूप से विचार किया जाता है-वर्ण, वश्य,तारा योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्रो, भकूट एवं नाडीकूट | इन आठ प्रकार के कूटों में क्रमश: एक एक की वृद्धि से कुल 36 गुण होते है | यथा वर्ण का 1, वश्य के 2, तारा के 3, यानी के 4, ग्रणमैत्रों के 5, ग्रहमैत्रों के 6, भकूट के 7 तथा नाडीकूट के 8 गुण |[2] यदि वर और कन्या के 18 गुण से अधिक प्राप्त हो जाए तो ज्योतिषशास्त्र के अनुसार शुभ अन्यथा निंदनीय होता है |

विवाह मेलापक में नाडोकूट को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया गया है | आचार्यों के अनुसार नाडोकूट सभी कूटों का शिरोमणि है | जिस प्रकार विवाहित कन्या के लिए मंगलसूत्रा आवश्यक है उसी प्रकार विवाह मेलपाक में नाडोशुद्धि अत्यन्त आवश्यक है |[3] अन्य कुटों की अपेक्षा इसे सर्वाधिक आठ अंक प्राप्त है | अत: विवाह मेलापक में नाडोकूट का सर्वत्र यथाशस्त्र विचार करना चाहिये |

नाडोकूट

नाडोकूट का सम्बन्ध नक्षत्रों से है | ज्योतिशास्त्र के अनुसार नाड़ियां तीन प्रकार की होती है– आद्य-नाडी, मध्य-नाडो तथा अन्त्य-नाडी | रामदैवज्ञ के अनुसार ज्येष्ठा, आद्रा, उत्तराफाल्गुनी, शतभिषा इन प्रत्येक नक्षत्रों के युगल अर्थात ज्येष्ठा-मूल, आद्रा-पुनर्वसु, उत्तरफाल्गुनी-हस्त, शतभिषा- पूर्वाभाद्रपद्र और अशिवनी इन नौ नक्षत्रों की आदि नाडो है | पुष्य, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, भरणी, घनिष्ठा, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाफाल्गुनी, और उत्तराभाद्रपद नौ नक्षत्रों की मध्य नाडी है | स्वाति, कृतिका, आश्लेषा, अत्तराषाढ़ा इन नक्षत्रों के युगल अर्थात् स्वाति-विशाखा, कृतिका-रोहिणि, आश्लेषा-मघा, अत्तराषाढ़ा-श्रवण और रेवती नौ नक्षत्रों की अन्त्य नाडो है |[4] कुछ आचार्यों ने नाडी –कूट के विचार के लिए त्रिनाड़ो चक्र का विचार भी किया है, जा इस प्रकार है-अश्विन्यादि 27 नक्षत्रों को तीन तीन नक्षत्रों के आवृति से क्रम तथा उत्क्रम से गणना

करें | यदि वर कन्या के नक्षत्र एक पर्व में हो ता एक नाडी में होने से नेष्ट होता है |[5]

नाड़ी- दोष तथा उसका फल –

ज्योतिशास्त्र के अनुसार वर तथा कन्या की एक नाड़ी हो तो नाड़ी-दोष उपलब्ध होता है अर्थात वर-कन्या का जन्म नक्षत्र उक्त चक्रानुसार एक ही नाडो में पड़े तो नाड़ी-दोष की संरचना होती है अत: एसी स्थिति में ज्योतिशास्त्र की दृष्टि से विवाह निन्दनीय है | इस दोष का फल आचार्य वराहमिहिर ने इस प्रकार बताया है- आदि नाड़ी में वर-कन्या का जन्म होने पर उनका वियोग निश्चित है, दोनों का जन्म मध्य-नाडी में होने पर दोनों को मृत्यु तथा अन्त्य-नाड़ी होने पर अत्यन्त दुःख तथा वैधव्य की प्राप्ति होती है, इसलिये तीनो समान नाड़ियों का परित्याग करना चाहिये |[6] आचार्य गर्ग के अनुसार संश्लिष्ट मध्यनाडी पुरुष का नाश करती है | पार्श्वैकनाड़ो कन्या का नाश करती है | आसन्न एक नाडी शीघ्र मृत्युदायी होती है तथा दरस्थित एकनाड़ो बहुत काल के बाद अनिष्ट करने वाली होती है | आचार्य गर्ग के मत को पुष्ट करते हुए आचार्य विशिष्ट कहते है- मध्यनाड़ो पुरुष का नाश करती है, पार्श्वनाडी कन्या का विनाश करती है | पार्श्व से अभिप्राय है समीपवतो नाडो | यदि समीपवतो आवृति की नाडो हो तो वर्ष के अन्तराल में तथा यदि दूर के अन्तर पर हो तो तीन वर्ष में नाश करती है | जैसे उक्त चक्र के अनुसार अश्विनी-आर्द्रा, भरणी-मृगशिरा, तथा रोहिणी आश्लेषा नक्षत्रों को आद्य-नाडो समीवातो होने से एक वर्ष में वर-कन्या को उक्त अशुभपफल देने वाली होती है | इसी प्रकार अन्य नक्षत्रों के विषय में भी समझना चाहिए |

अश्विनी- उत्तरफाल्गुनी, आर्द्रा-हस्त आदि अन्य नक्षत्रों के व्यवधान के बाद एक नाडी हो तो तीन वर्षों में उक्त अशुभपफल देने वाली होती है |[7] अत: नारद कहते है कि अन्य सभी गुणों से युक्त होने पर भी

एकनाडी में विवाह प्रयत्न से वर्जनीय है | क्योंकि वह दम्पति के लिए मृत्युकारक होता है|[8]

कुछ आचार्यों ने देशभेद से नाडो विचार किया है | इस व्यवस्था के अनुसार गोदावरी के दक्षिण में सभी वर्णों के लिए पशवकनाडो शभ कही गई है | क्षत्रियादि क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र वर्नो के लिए कहीं कहीं कन्या के ना मिलने पर पशवकनाडो शुभ है | अर्थात कन्या के आभाव में पशैवक नाडो होने पर भी विवाह किया जा सकता है |[9] नारद मतानुसार अहल्यादेश मे चार नाडो, पंचाल देश में पांच नाडो तथा इससे भिन्न देशों में सब जगह तीन नाडो का विचार किया जाता है |[10]

नाडी दोष का निरस्तीकरण :-

आचार्यों के अनुसार कुछ विशेष परिस्थितियों में नाडी दोष निरस्त हो जाता है | यथा –

1. वर-वधु का जन्म एक ही राशि में हो तथा नक्षत्र भिन्न हो तो नाडी दोष निरस्त हो जाता है | जैसे वर-वधु दोनो का जन्म मेष राशि में हो परन्तु एक का जन्म नक्षत्र अश्विनी अथवा भरणी तथा दुसरे का कृत्तिका का प्रथम चरण| इस प्रकार नक्षत्र भेद होने पर नाडो दोष निरस्त हो जाता है | (अश्विनी नक्षत्र के चार चरण, भरणी नक्षत्र के चार चरण तथा कृतिका नक्षत्र का एक चरण मेष राशि है |)
2. वर-वधू का जन्म नक्षत्र एक हो तथा राशि अलग अलग हो तो नाडी दोष निरस्त हो जाता है | यथा कृत्तिका का प्रथम पाद मेष राशि में तथा तीन पाद वृष राशि में है | अत: यदि वर-वधु दोनों में से किसी एक का जन्म कृत्तिका के प्रथम चरण में तथा दुसरे का जन्म द्वितीय, तृतीय अथवा चतुर्थ चरण में तो शास्त्रानुसार नाडी दोष निरस्त हो जाता है |
3. वर-वधु का जन्म नक्षत्र एक हो किन्तु चरण अलग हो तो भी नाडी दोष निरस्त माना जाता है |

उक्त तीनों स्थितियों में नाडी दोष के निरस्तीकरण के प्रमाण वशिष्ठ संहिता, मयूरचित्रकम, गर्गसंहिता,मुहूर्त चिंतामणि इत्यादि अनेक प्रमाणिक ग्रन्थों में उपलब्ध होते है | नारद अनुसार एक राशि तथा भिन्न नक्षत्रा होने पर दम्पति का विवाह होने पर उत्तम,दोनों की राशि भिन्न एवं नक्षत्रा भेद होने पर मध्यम होता है | एक नक्षत्र तथा एक राशि में विवाह प्राणहानिदायक होता है |[11] केशवार्क पुर्वाचार्यों के मत को पुष्ट करते हुए कहते है कि एक राशि भिन्न नक्षत्र तथा भिन्न राशि एक नक्षत्र होने पर किये गए विवाह में कृत्तिका- रोहिणि का दोष नहीं होता अपितु परस्पर प्रीति करने वाला होता है |[12]

आचार्य वशिष्ठ के मतानुसार यदि वर-वधु की एक राशि तथा नक्षत्र हो तो चरण भेद होने पर नवांश भेद ग्रहण करना चाहिये परन्तु यह संकोच विषय में अर्थात यदि अत्यन्त आवश्यक हो तभी ग्रहण करें |[13] जैसे भरणी नक्षत्र के प्रथम पाद में वर का जन्म तथा द्वितीय चरण में स्त्री का जन्म हो तो यदि अत्यन्त आवश्यक हो तो विवाह किया जा सकता है मुहुर्तचिंतामणि पीषधराटीका में इस मत को अनेक आचार्य के संदर्भों द्वारा पुष्ट किया गया है|[14]

जन्मनक्षत्र समान होने पर पाद वेध -

नाडीकूट में वर-कन्या का जन्म नक्षत्र एक तथा पादभेद होने पर पाद वेध का विचार अवश्य करना चाहिये | वर-कन्या में से किसी एक का जन्म, नक्षत्र के प्रथम चरण में तथा दुसरे का चतुर्थचरण में अथवा एक का जन्म द्वितीय चरण में तथा दुसरे का तृतीय चरण में हो तो नाडीपादवेध माना जाता है | दोनो के नक्षत्र चरणों में वेध होने पर पूर्ण नाडोदोष होता है | यदि नक्षत्रचरणों में वेध ना हो अर्थात वर-कन्या में से किसी एक का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में तथा दुसरे का द्वितीय अथवा तृतीय चरण में इस प्रकार से पाद वेध ना हो तो नाडो दोष स्वल्पदोष करने वाला होता है |[15]

कतिपय आचार्य के मतानुसार कुछ ऐसे नक्षत्र है, जिनमें जन्म होने पर नाडी दोष प्रभावहीन हो जाता है | ज्योतिनिर्बन्ध इस विषय में उल्लेख प्राप्त होता है कि रोहिणी, आद्रा, मघा, विशाखा, पुष्य, श्रवण

तथा उत्तराभाद्रपदा इन में से किसि एक नक्षत्रा में वर-वधु का जन्म हो तो नाडी दोष नहीं होता|[16] विधिरत्न के अनुसार विशाखा, पुष्य,भरणी, पुर्वाफाल्गुनी तथा मघा नक्षत्रों में जन्म हो तो नाडो दोष का शमन हो जाता है |[17] नाडी दोष के परिहार के विषय में विवाह कौतुहल का मत है कि वर- कन्या की राशि का स्वामी एक ही ग्रह अथवा शुभ ग्रह शुक्र, गुरु अथवा बुध हो तो नाडी दोष प्रभावहीन हो जाता है |[18] इस सिद्धान्त के अनुसार वर-कन्या की राशि वृष तथा तुला अथवा दोनों में से कोई एक हो तो नाडी दोष निरस्त हो जाएगा | इसी प्रकार मिथुन-कन्या तथा धनु-मीन में भी विचार करना चाहिये |

उक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि नाडी दोष भंग के निम्न सूत्र है-

1. वर-वधू का जन्म राशि एक हों तथा नक्षत्र भिन्न हो तो विवाह किया जा सकता है |
2. वर-वधू का जन्म नक्षत्र एक हो तथा राशि अलग अलग हो तो नाडो दोष नहीं होता |
3. वर-बधू का जन्म नक्षत्र एक हो किन्तु चरण अलग हो तथा जन्म नक्षत्र चरणों में पाद वेध ना हो तो नाडो दोष निरस्त माना जाता है |
4. वर-कन्या की राशि का स्वामी एक ही ग्रह अथवा शुभ ग्रह शुक्र,गुरु अथवा बुध हो तो नाडो दोष नहीं होता |
5. रोहिणि, आद्रा, मघा, विशाखा, पुष्य, श्रवण उत्तराभाद्रपदा, विशाखा, पुष्य, भरणी, पूर्वाफाल्गुनी तथा मघा नक्षत्रो में यदि वर-वधू का जन्म हो नाडी दोष प्रभावहीन हो जाता है |

नाडी दोष को शान्त करने के उपाय:

नाडीदोष होने पर यदि विवाह अत्यन्त आवशक हो तो नाडी दोष की निवृति के लिए अनेक प्रकार के उपाय शास्त्रों में प्राप्त होते हैं | जैसे – यथा विधि मृत्युजय जपादि कराकर ब्राहमणा को स्वर्णादि का दान करने से नाडी दोष शान्त हो जाता है | गादान, अन्नदान वस्त्रादन

तथा स्वर्ण का दान समस्त प्रकार के दोषों को शान्त करने वाला होता है |[19]

इस प्रकार नाडो कूट अष्टकूटों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है तथा सर्वाधिक अंक प्राप्त है | विवाह मेलापक में 28 गुण होने पर भी यदि नाडो दोष उपस्थित हो तो भी विवाह निन्दित है | अत: उक्त विधि से नाडीकूट का विचार कर तथा यथाशास्त्र अन्य कूटों का विचार करके मेलापक में उपलब्ध दोषों का यथाविधि निवारण कर विवाह करने से दाम्पत्य जीवन स्वस्थ, सुखद एवं खुशहाल होता है था पारिवारिक प्रसन्नता, वंशवृद्धि, आर्थिक समृद्धि तथा यश की प्राप्ति होती है|

<u>संदर्भ :</u>

1.मनुस्मृति, अध्याय 3, श्लोक संख्या 77-80

2.वणो वश्यं तथा तारा योनिश्य ग्रहमैत्रकम |
गणमैत्र भकूट च नाडी चेति गुनाधिका ||
मुहूर्तचिंतामणि:, विवाहप्रकरणम श्लोक संख्या-21

3.नाडीकूट तु संग्राह्यं कूटानां तु शिरोमणि |
ब्रह्मणा कन्यकाकण्ठ सूत्रत्वेन विनिर्मितम |
मुहूर्तचिंतामणि:, विवाहप्रकरणम श्लोक संख्या – 34, पीयुषधाराटीका

4.ज्येशर्मणेशनीराध्पिभयुगयुगं दास्त्रां चैकनाडी
पुष्येन्दुत्वाष्ट्रमित्रान्तकवसुजलभं योनिबुध्ने च मध्या |
वा वग्निव्यालविष्वोडुयुगयुगमथो पौष्णभं चापरास्याद
दम्पत्योरेकनाडायां परिणयनमसन्मध्यानाडयां हि मृत्यु ||
मुहूर्तचिंतामणि:, विवाहप्रकरणम श्लोक संख्या – 34.

5.आवृतिभिस्त्रिभिरश्वभाद्यं क्रमोत्क्रमात्संगणएदुडूनि |
यदेकपर्वणयुभयोश्च धिष्णये नेष्टा नृनार्योभृशमेकनाडी ||
मुहूर्तचिंतामणि:,विवाहप्रकरणम श्लोक सं.– 34, पीयुषधाराटीका

6.आद्येकनाडी कुरुते वियोग मध्याख्यनाडयामुभयोर्वीनाश:|अन्त्य च वैधव्यमतीवदु:ख तस्माच्च तिस्त्र:प्रयत्नेन परिवर्जनीया: |
मुहूर्तचिंतामणि:, विवाहप्रकरणम श्लोक संख्या – 34, पीयुषधाराटीका

7.सा मध्यानाडी पुरुष निहन्ति तत्पार्श्वनाडी खलु कन्यकां तु |
आसन्नपयायस्मागता चेद्वषेण साप्यन्तरिता त्रिवर्षे: |
वशिश्संहिता, विवाहाध्याय:, श्लोक संख्या – 203
8.एकनाडीविवाहश्च गुणै सर्वै समन्वित |
वर्जनीय प्रयत्नेन दाम्पतयोर्निध्न यत: ||
बृहददैवज्ञर जनम प्रकरण-31, श्लोक संख्या-401
9.महूर्तचिंतामणि: पीयूषधरा टीका, विवाहप्रकरणम, श्लोक संख्या.34
एकनक्षत्राजाताना नाडी दोषो न विद्यते | ज्योतिषतत्वप्रकाश
10.चतुर्नाडीत्वहल्यायां पांचाले पंच नाडिका |
त्रिनाडी सर्ग देशेषु वर्जनीया प्रयत्नत: ||
11.राश्यैक्ये चेदिभन्नमृक्षं स्यान्नक्षत्रौक्ये राशियुग्मं तथैव |
नाडी दोषो नो गणाना च दोषो नक्षत्रक्ये पादभेदे शुभ स्यात् ||
मुहूर्तचिंतामणि:, विवाहप्रकरणम श्लोक संख्या – 35
12.एकराशौ पृथग्धिष्णये दम्पतयो: पाणिपीडनम उत्तम मध्यमं भिन्नराश्येएकर्क्षग्योस्तयो: ||
एकर्क्ष चैकराशौ च विवाह प्रणहानिद: |
बृहददैवज्ञरंजनम, प्रकरण-31, श्लोक सं.-409, 414
13.अभिन्नराशयोर्यादि भिन्नमृक्षमभिन्नमृक्षं यदि भिन्न राशयो: |
प्रितिस्तदानीं निबिडा नृनार्योश्चेत्तिकारोहिणीवन्न नाडी ||
विवाहवृंदावन, अध्याय 3, श्लोक सं.424
14.यद्युभयोरेकर्क्ष भवति तदा चांशको भिन्न: |
15.महूर्तचिंतामणि:, पीयुषधराटीका, विवाह प्रकरणम, पृ. संख्या-360
16.आद्यांशेन चतुर्थांश चतुर्थांशेन चादिभम |
द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम |
पयो: भांशव्यधश्चैव् जायते वर कन्न्यो: ||
तयोर्मत्युर्न सन्देह शेषाशा: स्वल्पदोषदा: ||
नरपतिजयचर्यास्वरोदय: चक्राध्याय: श्लोक 126
17.रोहिण्याद्रामघेन्द्राग्नितिष्यश्रवणपौष्णभम |
उत्तराप्रोश्पाच्चैव नक्षत्रैक्येऽपि शोभना ||

महूर्तचिंतामणि: पीयुषधराटीका, विवाहप्रकरणम, पृ.सं.-360
18.विशाखिकाद्राश्रवणप्रजेशतिष्यान्त्यपूर्वमघा: प्रशस्ता |
स्त्रोपुंसतारेक्येपरिग्रहे तु शेषा विवजर्या इति संगिरनते ||
बृहददैवज्ञर जनम, प्रकरण-31, श्लोक संख्या-422
19.शुक्रे जीवे तथा सौम्ये एकराशीश्वरो यदि |
नाडी दोषो न वक्तव्य सर्वथा यत्नतो बुध: | विवाह कौतुहल
20.दोषापत्त्ये नाडया मृत्यु जयजपादिकम |
विधय ब्राहमणांश्चैव तर्पयेत्का चनादिना ||
गो अन्नं वसंन हेमं सर्वदोषापहारकम ||